राष्ट्रोपनिषत्

रचयिता
स्व. आचार्य डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर विद्यालङ्कारः
(महामहिम-राष्ट्रपति-सम्मानित)

हिन्दी-रूपान्तरण-कर्त्री
सौ. श्रीमती इन्दु शर्मा
एम.ए., शिक्षाचार्या

अंग्रेजी-रूपान्तरण-कर्त्ता
महामण्डलेश्वरः स्वामी श्री ज्ञानेश्वरपुरी
विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थानम्, जयपुरम्

निर्लज्जाः शीलहीनाश्च, शोभन्ते महिला नहि ।
लज्जां शीलमतः स्वस्य, रक्षन्तु सर्वथैव ताः ॥२६१॥

लज्जाहीन और शीलहीन महिलायें शोभित नहीं होती हैं । अतः वे महिलायें लज्जा और शील की सभी प्रकार से रक्षा करें ।

Shameless and immoral women are not beautiful/graceful. Therefore, women's modesty and morality should be protected in every possible way.

निर्वाचकेषु येषां न, शौचं किञ्चन वर्त्तते ।
राष्ट्रं प्रति कियत् तेषां, शौचं तद् भविष्यति ॥२६२॥

निर्वाचन करने वालों के प्रति जिनकी कोई ईमानदारी नहीं है, राष्ट्र के प्रति उन निर्वाचितों की कितनी ईमानदारी होगी ?

If electors have no honesty, then how much will they be honest towards the nation?

निर्वाचनोत्तरं स्वार्थाद्, दलं चेत् परिवर्त्यते ।
तर्हि विश्वासघातोऽयं, स्वस्य निर्वाचकान् प्रति ॥२६३॥

चुने जाने के बाद स्वार्थ के पीछे यदि दल बदला जाता है तो वह अपने को चुनने वालों के प्रति विश्वासघात ही है ।

If the party after winning the elections changes because of self-interest, then it is disloyal to its voters.

निर्वाचिता जना दूरे, तिष्ठन्तु यदि सर्वदा ।
जनता किं न रुष्टाऽस्तु, स्वकार्ये विफलता सती ? ॥२६४॥

यदि निर्वाचित हुए लोग सदा ही दूर रहें तो अपने कार्य में विफल हुई जनता उन निर्वाचित नेताओं पर क्या रुष्ट नहीं हो ?

If elected politicians are always unavailable won't, then the people be angry on them when their work is not done.

निर्वाचितोऽपि भूत्वा चेत्, कर्त्तव्यं पूर्यते न चेत् ।
तर्हि निन्दा भवत्येव , यशस्तु मिलते नहि ॥२६५॥

यदि निर्वाचित होकर भी उसके द्वारा अपना कर्त्तव्य पूरा नहीं किया जाता है तो निन्दा होती ही है और यश तो मिलता नहीं ।

If the elected one doesn't do his work; then one will not achieve fame but condemnation.

निष्प्राणतैव लोकानां, मृत्योर्नैवास्ति लक्षणम् ।
निपतेयुश्चरित्राद् ये, तेऽपि नूनं मृता मताः॥२६६॥

निष्प्राण हो जाना ही मृत्यु का लक्षण नहीं है । जो सच्चरित्र से पतित हो जाते हैं, वे भी निश्चित रूप से मृत ही माने जाते हैं ।

Being without prana is not the only sign of death. One who falls from a good character can surely be considered (as good as) dead.

निःसंकोचं स्वदोषं यः, स्वीकरोति जनान्तिकम् ।
साधुरेव स मन्तव्यः, परान् दोषाद् विमोचयम् ॥२६७॥

जो सब लोगों के पास अपना दोष निःसंकोच स्वीकार कर लेता है, दूसरों को दोष से छुड़वाता हुआ वह मनुष्य साधु ही माना जाना चाहिये ।

That person should be considered a saint/righteous who in front of everybody freely accepts one's faults and removes the faults of others.